



पाक्षिक

परोपकारिणी



भव्य ऋषि मेला सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र



विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः॥

वर्ष : ६१ अंक : २३

दयानन्दाब्दः १९५

विक्रम संवत्: मार्गशीर्ष शुक्ल २०७६

कलि संवत्: ५१२०

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,१२०

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-मन्त्री, परोपकारिणी सभा

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-३०० रु.

पाँच वर्ष-१२०० रु.

आजीवन -३००० रु.

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर

त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर

आजीवन (१५वर्ष)-५०० पा. / ८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

दिसम्बर प्रथम २०१९

अनुक्रम

०१. वेदों में श्रीराम आदि की कथा...	सम्पादकीय	०४
०२. मृत्यु सूक्त-४२	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	०९
०४. सनातनियों के उत्तरित प्रश्नों पर...	डॉ. रामप्रकाश वर्णी	१४
०५. ईश्वर के अनेक नाम	पं. हरिशरण	१६
०६. चौधरी छोटूराम, अम्बेडकर....	गुरप्रीत चहल	२१
०७. हिन्दुओं की भावी पीढ़ी का भविष्य	स्वामी ओमानन्द	२३
०८. राम के मार्ग पर चलें या कृष्ण के	संजय मोहन मित्तल	२८
०९. आर्यजगत् के समाचार		२९
१०. 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३०
११. संस्था की ओर से...		३१
१२. वैदिक पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित नया साहित्य		३४

www.paropkarinisabha.com

email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं

www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

राम के मार्ग पर चलें या कृष्ण के

संजय मोहन मित्तल

एक पीढ़ी का पाखण्ड अगली पीढ़ी के लिए परम्परा बन जाता है और हम तो सौ से अधिक पीढ़ियों की रूढ़ियों को ढो रहे हैं। अपने गौरवपूर्ण इतिहास के महानुभावों की पूजा करना हमारा कर्तव्य है, परन्तु पूजा उनकी मूर्ति को सजाकर, आरती उतारकर की जाये या फिर उनके द्वारा निर्देशित आदर्शों को अपने जीवन में उतारकर? एक गुरु के दो शिष्य हैं। एक जो गुरु की सेवा में तत्पर रहता है, प्रतिदिन उनके पाँव दबाता है, परन्तु उनके दिये ज्ञान को नहीं समझता और दूसरा जो हर क्षण गुरु से ज्ञान-प्राप्ति के लिए लालायित रहता है। उनसे न सिर्फ ज्ञान प्राप्त करता है, परन्तु उसको समझकर अपना ज्ञान बढ़ाता है। जीवन भी उसी प्रकार यापन करता है। इनमें से गुरु का प्रिय शिष्य दूसरा ही है जो गुरु के ज्ञान की परम्परा को आगे बढ़ाता है।

हिन्दुओं के सामने भी आदर्शस्वरूप दो चरित्र हैं, रामायण के श्रीराम और महाभारत के श्रीकृष्ण। इनकी पूजा प्रायः सभी हिन्दू करते हैं, परन्तु बहुत कम ही इनके आदर्शों का अपने जीवन में पालन करते हैं, बल्कि ज्यादातर तो इन आदर्शों के विपरीत ही व्यवहार करते हैं। सम्भवतः इसलिये कि रामायण और महाभारत के सन्देश में एक विरोधाभास सा प्रतीत होता है। मैं श्रीराम को अपना आदर्श मानूँ या श्रीकृष्ण को, यही मन में सबसे बड़ी दुविधा है और शायद इसी दुविधा में हम उनके आदर्शों को गोली मार केवल उनकी मूर्तियों की सजावट में ही लगे रहते हैं।

रामायण को देखें तो भाई-भाई के लिए त्याग कर रहा है। राम ने हँसते-हँसते राजपाठ भरत के लिए छोड़ दिया और भरत भी वह राजपाठ राम से लेने को तैयार नहीं। भातृप्रेम का इससे अच्छा उदाहरण नहीं मिलता। दूसरी ओर महाभारत में भाई-भाई राज्य के लिए लड़ रहे

हैं और जब अर्जुन रण में अपने भाइयों को देख विचलित होकर शस्त्र-त्याग कर देता है तो श्री कृष्ण गीता के प्रसिद्ध उपदेश में उसे अपने भाइयों को मारने के लिये हथियार उठाने के लिये प्रेरित करते हैं। विचित्र दुविधा है! मैं किसको ठीक मानूँ? परन्तु यदि हम ध्यान से देखें तो दोनों के आदर्शों में कोई अन्तर है ही नहीं। दोनों ही स्वार्थ से ऊपर उठकर, परमार्थ में निष्काम कर्म करने के उपदेश दे रहे हैं। क्षत्रिय का परम कर्तव्य है प्रजा की सुरक्षा व उसका पालन। श्रीराम ने देखा कि भरत धर्मात्मा भी हैं और विद्वान् भी। वह प्रजा का पालन बहुत कुशलता से करने में सक्षम हैं। इसी कारण श्रीराम को भरत को राजा बनाने में कोई आपत्ति नहीं है। यही भाव भरत के हृदय में भी है। वह मानते हैं कि श्रीराम प्रजा का पालन और भी अच्छा करेंगे और इसलिए वह श्रीराम को ही राजा बनाने के लिए उत्सुक हैं। दूसरी ओर महाभारत का दुर्योधन दुष्ट प्रवृत्ति का है, अहंकारी है और अपने अहंकार के वश अपनी भाभी द्रौपदी के चीरहरण से भी बाज नहीं आता। ऐसे दुष्ट के राज्य में प्रजा कष्ट ही सहेगी। इसीलिये श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सब आततायियों को मारने का उपदेश दिया, और उनको भी जो आततायियों का साथ दे रहे थे।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।

तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर॥

गीता के तीसरे अध्याय के इस श्लोक से स्पष्ट है कि हमें अपने सब कर्म यज्ञ की भावना से ही करने चाहिए। जैसे ही हम स्वार्थ से ऊपर उठ परमार्थ में कर्म करते हैं तो हमारे सभी कर्म ही भगवान् की पूजा बन जाते हैं। श्रीराम और श्रीकृष्ण के सन्देश का भेद मिट जाता है और दुविधा समाप्त हो जाती है।

न्यूजसी, अमेरिका

पढ़ाने में लाड़न नहीं करना योग्य है!

उन्हीं के सन्तान विद्वान्, सभ्य और सुशिक्षित होते हैं, जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते, किन्तु ताड़ना ही करते हैं, परन्तु माता-पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें, किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें।

(स. प्र. स. २)